पंजीयन संख्या : UPHIN 31237/2002

हिन्दी की प्रथम विज्ञान-कथा पत्रिका

विज्ञान-कथा

मूल्य : 15 रुपए

इण्टरनेट संस्करण

त्रैमासिक

वर्ष : 25 अंक : 89 जनवरी-मार्च, 2026

इंटरनेट संस्करण

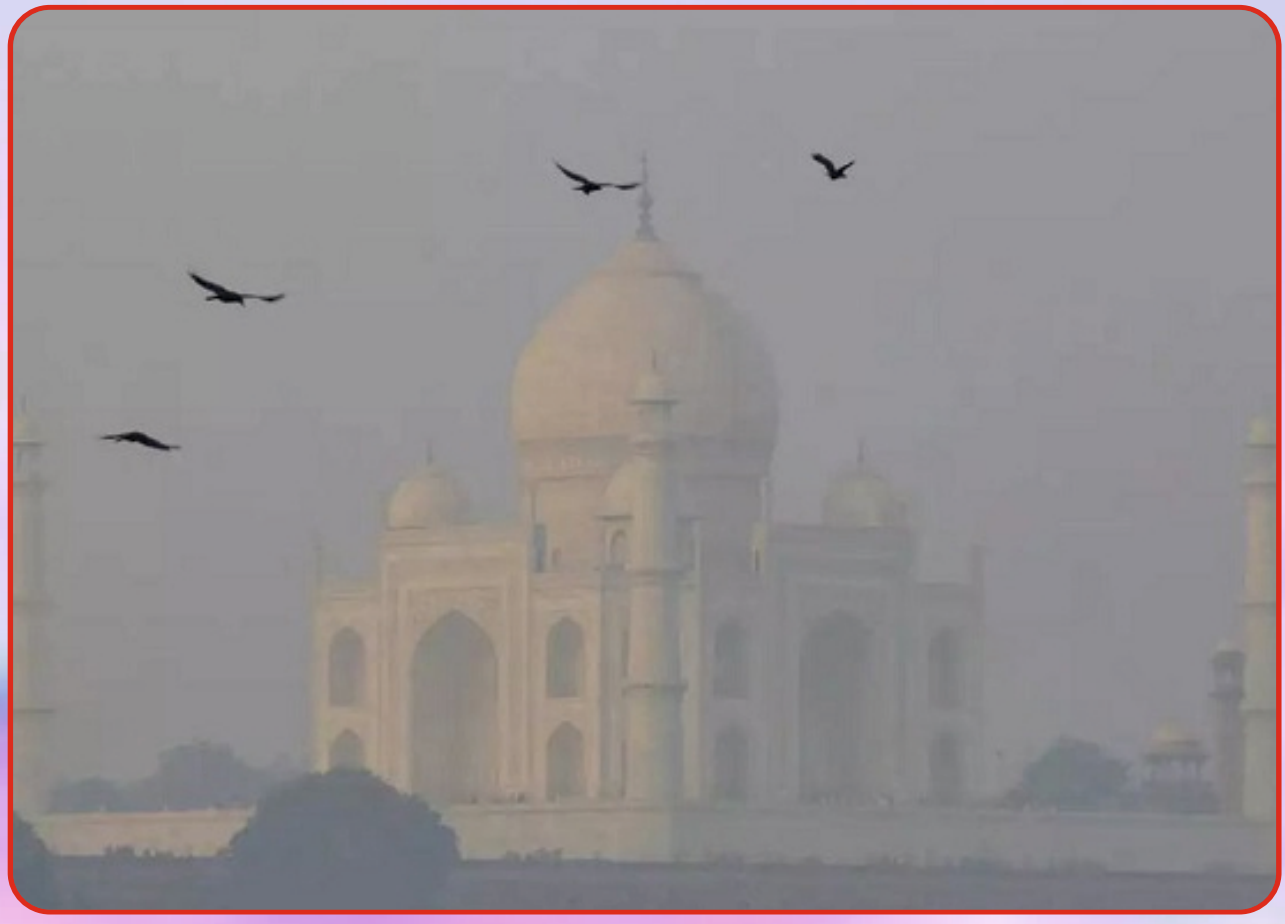

भारतीय विज्ञान-कथा लेखक समिति, अयोध्या द्वारा प्रकाशित

विज्ञान कथा

त्रैमासिक

वर्ष : २५ अंक : ८९ जनवरी-मार्च, २०२६

: सम्पादक :
डॉ. राजीव रंजन उपाध्याय
ई-मेल : rajeevranjan.fzd@gmail.com
Mob. : 9838382420

: कार्यालय :
भारतीय विज्ञान कथा लेखक समिति
परिसर कोठी काके बाबू,
देवकाली मार्ग, फैजाबाद २२४ ००१

: शुल्क :
इस अंक का मूल्य : १५ रुपए
आजीवन : २००० रुपए
(शुल्क मनीआर्डर/डिमांड ड्राफ्ट
समिति के नाम से भेजें)

- सम्पादन/संचालन पूर्णतया अवैतनिक
- विज्ञान कथा में प्रकाशित कथाओं से सम्बन्धित तथ्य एवं विचार लेखक के हैं। सम्पादक / प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।
- समस्त विवाद न्यायालय क्षेत्र, फैजाबाद - उ.प्र. में अवधार्य।

टंकण एवं पृष्ठ-सज्जा :
राजेश श्रीवास्तव
मो. 9451860205

प्रकाशक, सम्पादक एवं मुद्रक
डॉ. राजीव रंजन उपाध्याय द्वारा
भारतीय विज्ञान कथा लेखक समिति,
फैजाबाद २२४ ००१ के लिए
मुद्रित एवं प्रकाशित

इस अंक में

सम्पादकीय 5
-डॉ. राजीव रंजन उपाध्याय

तेईसवीं सदी का एक दिन 5-9
-डॉ. अरविन्द दुबे

कौन थी सारा? 10-12
- कल्पना कुलश्रेष्ठ

आवरण :
खतरे में ताजमहल

इस अंक के कथाकार

डॉ. राजीव रंजन उपाध्याय : जन्मः ४ मार्च १९४२, शिक्षाः एम.एसी.(लखनऊ विश्वविद्यालय), पीएच.डी.(काशी हिन्दू विश्वविद्यालय-वाराणसी), नोराड (नारवे) एवं अलेक्जैण्डर-फान-हमवोल्ट-फेलो (जरमीन), पूर्व प्रोफेसर कैंसर शोध, तबरीज़ विश्वविद्यालय, ईरान। अखिल भारतीय स्तर के प्रतिष्ठित पत्रों एवं पत्रिकाओं में अनेकों विज्ञान कथाएँ प्रकाशित तथा कुछ हिब्रू, बंगला में अनुवादित, प्रकाशन/प्रसारणः विज्ञान कथा संग्रह-वैज्ञानिक लघु कथाएँ (१९८९), आधुनिक विज्ञान कथाएँ (१९९१), सूर्यग्रहण (२००४), आधुनिक ययाति (२००४), वे चन्द्रमा से आये (२००५), वैज्ञानिक पुरा कथाएँ (२००६), उत्तरी आकाशगंगा में (२०१२), एक और शिखण्डी (२०१२), खाँसी (२०१२), इक्कीसवीं शती में अंधविश्वासों का चक्रव्यूह (२०१२), आधी रात का सूर्य (२०१३), रोमांचक विज्ञान कथाएँ (२०१६), चर्चित विज्ञान-कथाएँ (२०२०), संचार माध्यमों के लिए विज्ञान कथा (संपादन २०००), प्रेमघन की वंश परम्परा (२००२), प्रेमघन-ग्रन्थावली (आठ खण्डों में, २०१४), उपाध्याय चौधरी बदरी नारायण प्रेमघन, व्यक्तित्व एवं कृतित्व (२०२१), वैदिक पणिजन एवं उनके ऐतिहासिक प्रारूप फोनीशियन (२०२१), प्राचीन तुर्की-अनातोलिया के वैदिक हित्ती शासक (२०२१), प्रसारण माध्यमों के लिए विज्ञान गल्प-आकाशवाणी (संपादन २००२), टेलीविजन (संपादन २००२), लोकप्रिय विज्ञान लेखन एवं विज्ञान पत्रकारिताः अभिमत (२००५),नवसृजन (२००५), एक सौ से अधिक कैंसर संबंधित शोध-पत्र और कुछ विज्ञान कथाएँ आकाशवाणी से प्रसारित, पुरस्कार/सम्मान : ईरान का कैंसर शोध पुरस्कार (१९७८), अमेरिकन बायोग्राफिकल इंस्टीट्यूट के रिसर्च बोर्ड का सम्मान (१९९१), विज्ञान-वाचस्पति मानद उपाधि (१९९६), विज्ञान-कथा-भूषण सम्मान (२००१), पद्श्री सोहनलाल द्विवेदी जन्मशती हिन्दी-सेवी सम्मान (२००५), अम्बिका प्रसाद दिव्य स्मृति प्रतिष्ठा पुरस्कार रजत अलंकरण (२००६), साहित्य दिवाकर (२००७), सम्पादक सरताज (२००७), भारत गौरव (२००७), सम्पादकश्री (२००८), शान्तिराज हिन्दी गौरव अलंकरण (२००८), सम्पादक सिद्धहस्त (२००८), सम्पादक शिरोमणि (२०११), विज्ञान-परिषद् प्रयाग सम्मान (२०१३), गणेशदत्त सारस्वत सम्मान (२०१३), विज्ञान परिषद् प्रयाग : सारस्वत-सम्मान (२०१५) आदि। सम्प्रति स्वतंत्र रूप से विज्ञान कथा लेखन। मो. : ९८३८३८२४२०

इस अंक के कथाकार

डॉ. अरविन्द दुबे (जन्म २० अक्टूबर सन १९५७)

देश की प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में अनेक वैज्ञानिक लेख प्रकाशित।

पुरस्कार/सम्मान : इस्लामिक रिपब्लिक ऑफ ईरान ब्रॉडकांस्टिंग इंटरनेशनल रेडियो आवार्ड प्रतियोगिता (२००६),, खुद पहचानो रोग (२००५) (उ.प्र. सरकार द्वारा पुरस्कृत पुस्तक), विगत चार दशकों से निरंतर हिंदी और अंग्रेजी में साहित्यिक व विज्ञान लेखन कर रहे ख्यातिलब्ध विज्ञान संचारक एवम् बाल रोग विशेषज्ञ डाक्टर अरविन्द दुबे ने किंग जार्ज मेडीकल कालेज, लखनऊ से एम.बी.बी.एस. की शिक्षा ग्रहण करने के बाद यहीं से डिप्लोमा इन चाइल्ड हेल्थ (डी.सी.एच.) और एम.डी.(पीडियाट्रिक्स) की उपाधि प्राप्त की। रेडियो पर पांच कहानियां, नौ नाटक, नौ डोक्यूमेंट्री, सात विज्ञान वार्ताएं, पांच दर्जन विज्ञान नाटक, विज्ञान नौटंकी, विज्ञान नुक्कड़ नाटक, तीन विज्ञान कथा नाटक, एक दर्जन से अधिक विज्ञान कथाएं, १५ रेडियो विज्ञान धारावाहिक (सहलेखन) प्रसारित। दो रेडियो कार्यक्रम अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पुरुस्कृत। विषय विशेषज्ञ के रूप में कई आलेख लेखन कार्यशालाओं में भागीदारी। दूरदर्शन के लिए एक दर्जन से अधिक लघु फिल्मों और सामान्य ज्ञान कार्यक्रमों के लिए आलेख लेखन। शैक्षिक दूरदर्शन हेतु चालीस कार्यक्रम जिनमें से एक राष्ट्रीय स्तर पर पुरुस्कृत। गूगल व अन्य डिजिटल मीडिया पर दर्जनों कविताएं, कहानियां, व्यंग और पचास से अधिक विज्ञान आलेख प्रकाशित जिनमें से एक गूगल द्वारा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पुरुस्कृत। शताधिक विज्ञान आलेख, दर्जनों कविताएं, कहानियां, व्यंग देश की अंग्रेजी, हिंदी, गुजराती और उर्दू की विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित। अब तक हिंदी और अंग्रेजी में तीन पुस्तकें प्रकाशित एवं चार पुस्तकों में सहलेखन। उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान द्वारा नवम्बर २०१८ में बाल विज्ञान साहित्य लेखन में उत्कृष्ट योगदान हेतु सन् १९१७ के जगपति चतुर्वेदी बाल विज्ञान लेखन सम्मान से सम्मानित। सम्प्रति-उच्च हिंद इंस्टीट्यूट ऑफ मेडीकल साइंसेज, अटरिया, सीतापुर, उत्तर प्रदेश के पीडियाट्रिक्स विभाग में प्रोफेसर एवम् विभागाध्यक्ष के रूप में कार्यरत एवं लखनऊ में बच्चों के एक चिकित्सालय का संचालन। मो.-७३५५६०४५४३

कल्पना कुलश्रेष्ठ : जन्म : १९६६ में अलीगढ़ (उ.प्र.) में, शिक्षा : इग्नू, दिल्ली से सृजनात्मक लेखन में डिप्लोमा, प्रकाशन : विज्ञान कथा 'उस सदी की बात' चर्चित, राष्ट्रीय स्तर की अनेक पत्र-पत्रिकाओं में रचनाओं का प्रकाशन। कई रचनाओं का विभिन्न भाषाओं में अनुवाद। कई संकलनों में रचनाएँ संकलित। राष्ट्रधर्म द्वारा अखिल भारतीय हिंदी कहानी प्रतियोगिता में विज्ञान कथा पुरस्कृत। सी.वी.रमन तकनीकी लेखन पुरस्कार व विज्ञान कथाश्री से सम्मानित।

सम्पादकीय

प्रयागराज में आज करोड़ों लोग स्नान कर मोक्ष की कामना करेंगे, मोक्ष मानव जीवन का अन्तिम पुरुषार्थ है- प्रवृत्ति मानव की इस लीला का मौन दर्शक है। वह के कृत्यों के सम्मुख विवश है ठीक उसी प्रकार जैसे ताज मानव के कर्मों से त्रस्त दिखने के प्रयास में।

(डॉ. राजीवरंजन उपाध्याय)

तेईसवीं सदी का एक दिन

✍ डॉ. अरविन्द दुबे

"उठो आज ऑफिस नहीं जाना है क्या?" माधुरी रमन को झिंझोड़ कर उठा रही थी।

अब तक वह उसे तीन बार उठा चुकी थी पर हर बार रमन चादर में मुंह घुसा कर सो जाता था।

"मालूम है तुम्हें आज टैक्सीकॉप्टर की हड़ताल है। अपनी गाड़ी से जाना पड़ेगा। ज्यादा टाइम लगेगा। उठ जाओ, नहीं फिर बाद में हड़बड़ी करोगे। कमीज पहन लोगे तो पेंट के बटन नहीं लगाओगे। उठ जाओ।" माधुरी ने फिर रमन को झिंझोड़ा।

बदन को तोड़ता हुआ रमन उठ कर बैठा।

घड़ी की ओर देखा, "उई बाबा नौ बज गए। अभी तो मुझे नहाना-धोना और तैयार भी होना है।"

टैक्सीकॉप्टर के संचालक आज हड़ताल पर रहेंगे यह मैसेज रमन को एक दिन पहले ही मिल चुका था। इस पूर्व प्राप्त सूचना के आधार पर तो रमन को रोज से 2 घंटे पहले ही बिस्तर छोड़ देना चाहिए था क्योंकि अब उसे अपनी चालक रहित इलेक्ट्रिक कार से जाना होगा। ट्रैफिक जाम में दो घंटे से अधिक तो लगने ही वाले थे। बार-बार 'उठता हूं' 'उठता हूं' करते-करते एक घंटा बीत गया था। वैसे तो इस सब से बचने के लिए अधिकतर लोग घर से ही काम करते हैं पर सारे काम तो 'वर्क फ्रॉम होम' द्वारा नहीं हो सकते हैं। इस वर्क फ्रॉम होम कल्चर के बावजूद भी बहुत सारे काम ऐसे बच जाते हैं जिनके लिए बाहर निकलना अनिवार्य हो जाता है।

अब निरंतर दोहन और पानी की बर्बादी से पृथ्वी में पानी का जल स्तर इतना गिर गया है की पानी की किल्लत होने लगी है। इससे लोग रोज-रोज नहाने की 'विलासिता' वर्दाश्त नहीं कर पा रहे हैं। और नहाना भी कैसा? वह इक्कीसवीं शताब्दी वाले नल और बाल्टी तो कब के गायब हो चुके हैं। अब तो नल में टोंटी की जगह 'एटोमाइजर' लगाए जा रहे हैं। जिन्हें खोलते ही पानी की नन्हीं-नन्हीं बूंदों का एक फुहारा निकलता है। इससे एक गिलास पानी में ही पूरा शरीर भीग जाता है। इसके बाद दूसरे एटमाइजर से 'लिक्विड सोप' शरीर पर लग जाता है। अब साबुन भी ऐसे बनाए जाने लगे हैं कि जिन को शरीर से छुड़ाने में बहुत कम पानी लगता है। ज्यादातर लोग तो अब घर में बाथरूम बनवाते ही नहीं है। बाहर हर स्तर के व्यक्ति के लिए बहुत सारे 'स्नान-क्लब' उपलब्ध है। जितने पैसे दो उसी स्तर का बाथरूम प्रयोग करो। ज्यादातर लोग साप्ताहिक छुट्टी के दिन ही नहाना पसंद करते हैं। इसलिए इन इसलिए इन स्नान-क्लबों में साप्ताहिक छुट्टी के दिन काफी भीड़ हो जाती है। कुछ संपन्न लोग ही अपने घरों में बाथरूम बनवाते हैं। क्योंकि इसके लिए पानी का अलग से कनेक्शन लेना होता है। नहाने को एक विलासिता (लग्जरी) माना जाता है। इसलिए नहाने वाले पानी का प्रति यूनिट बिल पीने के पानी से कई गुना होता है। इसलिए इसमें कुछ लोग बेईमानी भी कर लेते हैं। इसमें वे पीने के पानी को स्नान के लिए प्रयोग कर लेते हैं। हालांकि पकड़े जाने पर उनसे प्रयुक्त पानी के मूल्य का दस गुना दंड के रूप में वसूला जाता है। कपड़े धोने के लिए पानी का प्रयोग करना अब करीब-करीब पूरी तरह बंद हो गया है। अब तो विशेष प्रकार के 'नैनोटेक्नोलॉजी युक्त स्मार्ट कपड़े' बनने लगे हैं जो अपने ऊपर पड़ी धूल और गंदगी को स्वयं साफ कर लेते हैं। ज्यादा गंदे होने पर उन्हें विशेष प्रकार की मशीनों में डालकर हवा के तीव्र प्रवाह और कुछ रसायनों से साफ कर लिया जाता है। यहां स्नान क्लबों में 'टोकन-सिस्टम' चलता है कुछ धनराशि देकर एक टोकन मिलता है। टोकन बाहर की मशीन में डालते ही उस व्यक्ति को आवंटित बाथरूम की टंकी में पानी की एक निश्चित मात्रा आ जाती है। नहाने के लिए यहां भी ऑटोमाइजर लगे हैं। यदि किसी व्यक्ति का एक बार दिए गए पानी में काम नहीं हो पाता है तो वह एक टोकन और खरीद कर अतिरिक्त पानी ले सकता है। पर सामान्यतः किसी व्यक्ति को भी एक स्नान में दो टोकन से अधिक नहीं दिए जाते हैं।

देर हो गई थी इसलिए आराम से बैठ कर नाश्ता करना अब संभव नहीं था। इसलिए एक सैंडविच मुंह में दबाए अपने शरीर पर डाली कमीज के बटन लगाते हुए रमन दरवाजे की ओर भागा, जहां उसकी 'चालक रहित इलेक्ट्रिक कार' आकर खड़ी हो गई थी। दरवाजे के पास पहुंचते ही सेंसर चालित दरवाजा 'वेलकम' कहकर अपने आप खुल गया। अपने मुंह में सैंडविच दवाए-दबाए रमन हड़बड़ी में कार में बैठ गया। जल्दी इतनी थी कि न तो उसने

अपनी बिल्डिंग के दरवाजे का विदाई संदेश 'सी यू अगेन' सुना और न ही उसे याद रहा कि बालकनी पर खड़ी उसकी पत्नी माधुरी हाथ हिला कर उसे विदा कर रही है।

'वेलकम मिस्टर रमन' के साथ कार का दरवाजा अपने आप बंद हो गया। अब कार के शीशे पर एक पारदर्शी एल.ई.डी. स्क्रीन चमक रही थी। रमन ने इस स्क्रीन पर कुछ निर्देश बोलकर फीड किए, यथा गंतव्य स्थान, अधिकतम गति, पहुंचने का संभावित समय आदि।

"कृपया अपनी सीट बेल्ट बांधें।" कार के कंप्यूटर में निर्देश दिया।

रमन के सीट बेल्ट बांधते ही कार रवाना हो गई। मुख्य सड़क पर आते ही रमन को परिस्थिति का अनुमान हो गया। टैक्सीकॉप्टर की हड़ताल के कारण आज सड़क पर कारों की भरमार थी। ट्रैफिक चल नहीं, रेंग रहा था।

"इसका मतलब आज कम से कम दो घंटे तो लेट होना ही है।" उसने सोचा।

दो घंटे लेट होने का मतलब अब कुछ और होता है। रमन जैसे लोगों के लिए उनके पूरे दिन के काम के घंटे तय होते हैं। उनके काम का दैनिक कोटा भी तय होता है। काम पर लेट होने पर न तो बॉस की डांट खानी होती है न कोई और शिकायत ही करता है। हर व्यक्ति को अपने लिए निर्धारित कार्य पूरे करना होता है। अगर कोई दो घंटे लेट है तो वह ऑफिस से दो घंटे लेट छूटेगा। आगे के लिए (पेंडिंग) कार्य छोड़ने का कोई प्रावधान नहीं होता है। यदि कोई कार्य उस दिन पूरा नहीं हो सकता है तो उसका कारण लिखकर उसे अगले दिन के लिए छोड़ा जा सकता है पर यह अतिरिक्त कार्य अगले दिन के निर्धारित कार्य में जुड़ जाएगा। इससे कार्यालय में आने वाले या 'वर्क फ्रॉम होम' करने वाले दोनों प्रकार के कर्मचारी अपना ध्यान इधर उधर न भटका कर काम में लगे रहते हैं। काम के समय इधर-उधर की बातें करके या नाश चाय-नाश्ते में नहीं गुजारते हैं। कुछ लोग तो लंच ऑवर में भी कार्य करते रहते हैं ताकि शाम को ऑफिस से समय पर या कुछ पहले छूट सकें। अगर किसी ने उस दिन का निर्धारित कार्य निपटा लिया है तो वह आफिस से दिन में कभी भी जा सकता है। हर हाल में एक निश्चित समय तक आफिस में उपस्थित रहने की बाध्यता नहीं है। हर रोज उस रोज का निर्धारित कार्य पूरा करके ही कार्य दिवस की एंट्री होती है जिसके आधार पर उनका वेतन बनता है। इसलिए ऑफिस में किसी के आने-जाने पर समय की पाबंदी नहीं है। हर कर्मचारी जानता है कि उनको उसको महीने के अंत में मिलने वाली धनराशि उसके द्वारा किए गए कार्य के आधार पर निर्धारित होगी न कि उसकी उपस्थिति के घंटों से। तकनीकी भाषा में इसे 'वर्क इकोनॉमिक्स' और काम करने के तरीके को 'वर्क-आउटपुट कल्चर' कहते हैं। इसमें उन लोगों को परेशानी होती है जो चापलूसी करके समय बिताना चाहते हैं या कार्य किए बिना समय काटना चाहते हैं। कोई भी किसी की चापलूसी करने में समय बिता सकता है पर उसे उस दिन का निर्धारित कार्य पूरा करके ही जाना होगा। अन्यथा कंप्यूटर अपने आप उनको उस दिन की प्रतिकूल प्रविष्टि दर्ज कर देगा इससे उन्हें माह के अंत में मिलने वाली धनराशि, जिसे अब सैलरी या तनख्वाह नहीं 'रिन्यूमरेशन' या 'पारिश्रमिक' कहा जाता है, भी प्रभावित होगी। हर कर्मचारी का ऑफिस में एक अकाउंट होता है। इस अकाउंट का पासवर्ड उस कर्मचारी को ही पता होता है हर रोज उसके द्वारा किए गए कार्य का पारिश्रमिक उसके खाते में जमा होता है जिसे वह अपना पासवर्ड लगाकर कभी भी निकाल सकता है। इसलिए तनख्वाह या पारिश्रमिक मिलने की कोई विशेष तारीख निर्धारित नहीं है। इस प्रणाली में कार्यालयों व कारखानों में होने वाले कार्य करने के तरीके में आमूल-चूल परिवर्तन कर दिया है। रमन को भी आज लंच ऑवर मिस करने के बावजूद दो घंटे देर से छूटना था। इसलिए अपने देर तक सोने को कोसते हुए वह अपना डिब्बाबंद (पैक्ड) नाश्ता कार में ही खाने लगा। एक क्रासिंग पर ट्रैफिक में उनकी कार करीब एक घंटे से फंसी थी। उसने घूम कर देखा, पीछे कारों का एक समुद्र था। यही हाल आगे ही भी था। प्रदूषण के कारण अब वायुमंडल में ऑक्सीजन का स्तर गिरने लगा है। इसलिए ऐसे स्थानों पर भीड़ में फंस जाने पर ऑक्सीजन की कमी होने लगती है। ऐसे में सांस लेना मुश्किल होने लगता है। इसलिए लोग ऑक्सीजन के माइक्रो सिलेंडर अपने साथ रखते हैं। रवि को भी सांस लेने में परेशानी महसूस होने लगी क्योंकि जाम में फंसे होने के कारण उसकी कार का इलेक्ट्रिक इंजन बंद था। रमन ने कार में फंसा माइक्रो सिलेंडर खींचा और अपने मुंह पर लगा लिया इससे

उसे कुछ राहत मिली। ऑफिस पहुंचने में करीब तीन घंटे लगे। टैक्सीकॉप्टर से तो आधे घंटे से कम का समय लगना था।

यह सब करने के बावजूद भी जाम में फंसे रहने के कारण ऑक्सीजन की कमी से रमन की सांस फूल रही थी। हालांकि ऑफिस जाकर काम शुरू करने की हड़बड़ी थी पर उसे लगा के जैसे उसके पैर काम ही नहीं कर रहे हैं। उसके कदम 'ऑक्सीजन पार्लर' की ओर मुड़ गए।

बढ़ते कल-कारखानों ने, गरमाती धरती ने, तरह-तरह के पर्यावरण प्रदूषण ने, पृथ्वी के वायुमंडल का सत्यानाश कर दिया है। जो व्यक्ति जितना संपन्न होता था वह उतने ही अधिक उपकरणों का प्रयोग करता था जिससे उसकी ऊर्जा खपत उतनी ही बढ़ जाती थी। अतिरिक्त ऊर्जा पैदा करने में पर्यावरण प्रदूषण और बढ़ जाता है। पर तब उन्हें इसकी परवाह नहीं थी। जो लोग सुख सुविधाएं खरीद सकते थे, भोग सकते थे उन्होने बिना यह सोचे अपने पैसों के बल पर इनका दुरुपयोग किया कि इसका खामियाजा उनकी आगे आने वाली पीढ़ी को उठाना पड़ेगा। आज उनकी पर्यावरण से छेड-छाड़ के कारण क्षमताविहीन लोग परशानियां भुगत रहे हैं। पेड़ कटने से जंगल करीब-करीब समाप्त हो गए है। उनकी जगह कंक्रीट के जंगल खड़े हो गए हैं। इससे वातावरण में ऑक्सीजन का स्तर निरंतर गिरता जा रहा है। अत्यधिक प्रदूषण की स्थिति में वायु में ऑक्सीजन स्तर घटकर करीब बीस या कभी-कभी 19.5 प्रतिशत रह जाने की घटनाएं होने लगी थी। तब कोई श्रम का कार्य करना तो दूर सामान्य कार्य करना भी मुश्किल हो जाता है। इसलिए सरकार ने यह नियम बनाया है कि हर ऑफिस में 'ऑक्सीजन पार्लर' स्थापित किए जाएं जहां कर्मचारियों को इन स्थितियों में ऑक्सीजन दी जा सके।

इसके अतिरिक्त हर इमारत पर 'वर्टिकल गार्डन' बनाने का नियम है। पर इन नियमों की मात्र खानापूरी ही की जाती है। केवल बड़े कार्यालय और कारखानों में इसकी समुचित व्यवस्था होती है। इन ऑक्सीजन पार्लर में स्वचालित बड़े-बड़े ऑक्सीजन ऑक्सीजन कंसंट्रेटर लगे होते हैं जो वायु से ऑक्सीजन अलग कर इसे कार्बन स्टील के बड़े-बड़े बेलनाकर सिलेंडरों में भरते रहते हैं। यह ऑक्सीजन पार्लर और इक्सवीं शताब्दी के ऑक्सीजन पार्लर से भिन्न होते हैं। तब इन्हें जहां शरीर को डिटॉक्स करने हेतु या अन्य लाभ पहुंचाने हेतु प्रयोग किया जाता था या फिर इन्हें पार्टी फैशन की तरह, तरह-तरह की सुगंधि मिला कर लिया जाता था। अब तेईसवीं शताब्दी में इसे उखड़ रही सांस को थामने के लिए अति आवश्यक उपाय की तरह प्रयोग किया जाता है। इसमें एक पारदर्शी पदार्थ का बना 6 फुट गुना 6 फुट माप का चौंबर होता है। इसमें एक टोकन मशीन लगी रहती है। इस मशीन में पार्लर के मैनेजर से एक टोकन खरीद कर डालना होता है। टोकन मशीन में डालते ही बाईस प्रतिशत ऑक्सीजन और अठत्तर प्रतिशत वायु का मिश्रण चौंबर में भरने लगता है। चौंबर में आराम कुर्सी पर बैठकर आराम करते हुए या लेट कर ऑक्सीजन लेने की व्यवस्था होती है। एक टोकन पर बीस मिनट तक यह सुविधा मिलती है। सामान्यजन इसे एक स्फूर्तिदायक, जीवनदायी, आयु बढ़ाने वाले डिटॉक्स करने वाले उपाय की तरह मानते हैं। पर इसके विरोधियों का कहना है कि इस तरह ऑक्सीजन के अधिक प्रयोग से फेफड़ों को स्थाई नुकसान पहुंच सकता है। इसलिए ऐसे पार्लर में यह अक्सीजन सुविधा आमतौर पर एक बार में बीस मिनट के लिए उपलब्ध कराई जाती है। हर गली-मोहल्ले में, सामान्य दुकानों में, टैक्सीकॉप्टर स्टेशनों में यहां तक कि कार्यालयों में भी यह आक्सीजन पार्लर खुल रहे हैं और अच्छा व्यवसाय कर रहे हैं। कुछ लोग ऐसे भी हैं जिन्हें धीरे-धीरे इस ऑक्सीजन की लत लगती जा रही है। वे जिस दिन ऑक्सीजन सहायता नहीं लेते हैं उन्हें बेचौनी, अनिद्रा से लेकर हंफनी तक होने लगती है। चिकित्सकों का मानना यह था कि ऑक्सीजन पर उनकी निर्भरता (डिपेंडेंस) मनोवैज्ञानिक (साइकोलॉजिकल) होती है। पर लंबे समय तक प्रतिदिन ऑक्सीजन लेने से फेफड़ों के ऊतकों में खराबी आने लगती है। जिसे ऑक्सीजन आघात या (ऑक्सीजन ट्रॉमा) कहा जाता है। इसके बाद उनकी यह मनोवैज्ञानिक निर्भरता (साइकोलॉजिकल डिपेंडेंस) ऑक्सीजन की शारीरिक निर्भरता (फिजिकल डिपेंडेंस) में बदल जाती है। तब बिना ऑक्सीजन लिए उनका काम नहीं चलता है। ऑक्सीजन पर उनकी निर्भरता इसके बाद उत्तरोत्तर बढ़ती जाती है।

रमन ने पार्लर के मैनेजर से हड़बड़ी में टोकन लिया। ऑक्सीजन की कमी से रमन की बेचौनी इतनी अधिक थी कि मैनेजर के औपचारिक अभिवादन का भी उत्तर दिए बिना ही रमन

अपना टोकन उठाकर पास के ही एक ऑक्सीजन चौंबर में चला गया। टोकन डालते ही बाईस प्रतिशत ऑक्सीजन और अठत्तर प्रतिशत वायु का मिश्रण चौंबर में तेजी से भरने लगा। रमन को जैसे इससे संतुष्टि न थी। उसने दीवार पर फंसा मास्क खींच कर अपने मुंह पर लगा लिया ताकि ऑक्सीजन की अधिक से अधिक मात्रा उसके फेफड़ों में शीघ्र से शीघ्र भर जाए। हालांकि यह आपातकालीन प्रक्रिया थी पर रमन उस समय बेचौन था। ऑक्सीजन की मात्रा फेफड़ों में जाते ही वह अपने आप को हल्का महसूस करने लगा। आनंद अतिरेक में उनकी आंखें मुंदने लगी। उसने अपने शरीर को ढीला छोड़ दिया। शरीर रुई के फाहों जैसा हल्का लगने लगा।

चौंबर में आ रही यांत्रिक आवाज से उसकी तंद्रा टूटी जो कह रही थी, "डियर कस्टमर डू यू नीड सेकंड शॉट?" उसने आंखें खोली। उसकी नजरें सामने बने फायर के निशान पर टिक गईं। उसने हाथ के इशारे से मैनेजर को ऑक्सीजन के दूसरे शॉट के लिए मना किया। रमन कुर्सी से उठकर चौंबर के दरवाजे तक पहुंचा तो चौंबर का एयरटाइट दरवाजा अपने आप खुल गया। रमन का चित्त बहुत प्रसन्न था। वह अपने आगे के कार्य के लिए अपने आपको तरो-ताजा महसूस कर रहा था।

❐

ईमेल-drarvinddubey2004@gmail.com

कौन थी सारा?

✍ कल्पना कुलश्रेष्ठ

"सो गईं क्या? उठो जल्दी उठो.... तुम्हें मेरी मदद करनी होगी। मेरे ऊपर बड़ी मुसीबत आ गई है।" किसी ने उसे झिंझोड़कर जगाया। सीमा हड़बड़ाकर उठ बैठी। अभी-अभी तो सोई थी। स्कूल से बहुत सारा गृहकार्य मिला था। गणित के सवाल हल करने में उसे बहुत समय लग गया था। उसकी माँ विज्ञानं की शिक्षिका थीं। उनका कहना था कि दिमाग के विकास के लिए गणित के सवाल खुद हल करना बहुत जरूरी है। वह उसे चौट जीपीटी या परप्लैक्सिटी जैसे ए.आई. टूल की मदद नहीं लेने देती थीं।

उसने पलकें झपकायीं। कमरे में नाइट बल्ब की हल्की रोशनी फैली हुई थी। सामने घड़ी में रात के 12.00 बज रहे थे।

"कौन हो तुम?" वह अचकचाकर बोली। सामने बड़ी अनोखी सी पोशाक पहने लगभग 12 वर्ष की एक लड़की खड़ी थी। उसकी चुस्त पोशाक पर नन्हे बल्ब व इंडिकेटर जगमग कर रहे थे। बहुत सी धारियाँ और पैटर्न दिखाई दे रहे थे, जैसे वे इलेक्ट्रॉनिक सर्किट हों। वह ध्यान से देखने लगी।

"यह तो इलेक्ट्रॉनिक सर्किट....." सीमा के मुँह से निकला।

" हाँ.... हाँ वही है....। इससे हम अपने मेनफ्रेम कंप्यूटर से जुड़े रहते हैं। अब वह सब छोड़ो। मैंने तुम्हें इतनी रात को पढ़ते देखा तो यहाँ आ गई। क्या तुम मुझे दो और तीन को जोड़ना सिखाओगी?" लड़की बेसब्री से बोली।

"क्या आधी रात को मेरे कमरे में घुसकर तुम दो और तीन का योगफल जानना चाहती हो? जल्दी बताओ तुम कौन हो?" सीमा की समझ में कुछ नहीं आया। वह माँ को आवाज देने लगी। पिताजी टूर पर बाहर गए हुए थे।

"नहीं.....नहीं किसी को मत बुलाओ। बेकार तमाशा खड़ा हो जाएगा।"

तुम यहाँ आयीं कैसे? हमारे बंद घर में कैसे घुसीं? अरे तुम कोई चोर? सीमा आशंकित होकर चिल्ला पड़ी।

"अरे नहीं मैं कोई चोर नहीं हूँ। मैं तो टाइम ट्रैवलर यानी काल यात्री हूँ। अपनी टाइम मशीन से मैं कहीं भी आ जा सकती हूँ। मैं फिलहाल 2120 से आई हूँ।" सारा ने घबराकर जल्दी-जल्दी डिवाइस पर देखकर बताया। पहले तो सीमा को डर लगा पर फिर उत्सुकता ने उसे घेर लिया।

"तो विज्ञान कथाओं वाली एच.जी. वेल्स की वह प्रसिद्ध टाइम मशीन वैज्ञानिकों ने बना ली है।" सीमा अचरज से भर गई।

"हाँ..... ए.आई. यानी आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की सहायता से टाइम मशीन बनाना संभव हो पाया। मनुष्य व ए.आई ने मिलकर इसका निर्माण किया है।" सारा ने फिर से डिवाइस पर देखकर बताया।

"ए.आई. हमारे समय से ही बहुत सारे काम करने लगे हैं। चौट जीपीटी और परप्लेक्सिटी जैसे ए.आई. ऐप का प्रयोग हम भी बहुत से कामों में करने लगे हैं सीमा ने खुश होकर बताया।

"तुम्हारा नाम क्या है?" सीमा ने पूछा।

मेरा नाम....ओह एक सैकेंड रुको....." उसने हाथ में थमा डिवाइस देखा।

"हाँ.....मेरा नाम सारा है।"

"तुम्हें अपना नाम याद नहीं?" सीमा हैरान रह गई।

"अरे हमें हर बात अपने ए.आई. डिवाइस पर पूछने की आदत है। वैसे भी हम बहुत कम बातें याद रख पाते हैं।" लड़की झेंप गई।

"हालाँकि तुम्हारी यह नाटक कंपनी जैसी ड्रेस तो अजीब है पर नाम बहुत ही प्यारा है। सारा..... जानती हो यह देवी दुर्गा का एक पर्यायवाची नाम है।"

सहज होकर सीमा ने कमरे की लाइट जला दी। सारा ने चारों ओर देखा।

"ये इतनी किताबें! तुम इन्हें पढ़ती हो?"

"हाँ हम पढ़ाई करते हैं तो किताबें तो चाहिए न! हालाँकि हम ई.बुक्स का भी उपयोग करते हैं। तुम नहीं पढ़तीं?"

"हमें किताबें पढ़ने की क्या जरूरत? सारे प्रश्न तो ए. आई.

से हल हो ही जाते हैं! फिर हम क्यों पढ़ें?" सारा ने उपेक्षा से कहा।

"तुम्हारे स्कूल का नाम क्या है?" सीमा के पूछने पर सारा ने फिर अपना डिवाइस देखा और स्कूल का नाम बताया।

"तुम कहाँ रहती हो?" सीमा का अगला प्रश्न सुनकर सारा के मुख पर उलझन के भाव आ गए। वह फिर से अपने डिवाइस पर देखने लगी।

"ए.आई. का कहना है कि मैं बेंगलुरु में रहती हूँ।" उसने देखकर बताया। सीमा को अजीब लगा।

"तुम्हारी हॉबी क्या है? चित्रकारी, गायन, खेल या बागवानी वगैरह? वैसे मुझे तो चित्रकारी पसंद है।" सीमा ने पूछा तो सारा फिर से डिवाइस पर झुक गई।

"हम ये सब फालतू के काम नहीं करते। ये तो ए.आई. के काम है न? हमारे समय में लोग कलाकार, शिक्षक, अभिनेता, चित्रकार, लेखक, डॉक्टर, इंजीनियर या वैज्ञानिक नहीं बनते। जरूरत ही नहीं पड़ती। यह सारे काम ए.आई. कर देते हैं।" सारा की बातें सुनकर सीमा सन्नाटे में आ गई। मनुष्य का भविष्य किस दिशा में जा रहा था?

"फिर तुम्हें यहाँ आने की आवश्यकता नहीं थी। तीन और दो का योगफल तो तुम ए.आई. से पूछ सकती हो न।" सीमा ने उकताकर कहा।

"हमें यह प्रोजेक्ट हमारे गणित के ह्यूमेनॉइड ए.आई. अध्यापक ने दिया है। यह हमें बिना ए.आई. की सहायता के खुद हल करना होगा। इसका उत्तर लॉक कर दिया गया है। हम किसी एप पर इसे नहीं देख सकते। अगर हमने इसे हल नहीं किया तो आगे से ए.आई. हमारी कोई मदद नहीं करेगा।" सारा ने परेशान होकर कहा। सीमा को उस पर तरस आ गया। उसने सामने मेज पर फैली कलर पेंसिलों में से दो पेंसिलें निकालकर बिस्तर पर रख दीं।

"देखो.... एक, दो....।" फिर उसने तीन पेंसिलें और उठायीं।

"अब तीन, चार, पाँच.....यानी दो और तीन की संख्या जुड़कर पाँच हो गईं।" उसने सारा की उंगली उठाकर एक-एक पेंसिल पर रखी और पाँच वर्ष के बच्चे की तरह उसे जोड़ना सिखाने लगी।

सारा ने दोहराया। उसके मुख पर प्रसन्नता का भाव झलकने लगा। सीमा ने मुस्कुराकर उसे देखा। सीखने की प्रक्रिया और इससे मिलने वाली संतुष्टि सारा के लिए अनोखी बात थी।

"तो कैसा लगा तुम्हें अतीत में आकर?

"मुझे नहीं पता.....पूछती हूँ।" सारा ने अनिश्चितता से कहते हुए जैसे ही डिवाइस की ओर देखा, सीमा ने झपटकर उसे छीन लिया।

"किसी ए.आई. टूल पर इतना निर्भर होना अच्छा नहीं है सारा कि तुम मामूली सवालों के जवाब भी न दे सको। खुद सोचकर बताओ।"

सारा ने दिमाग पर जोर डाला। उसके चेहरे पर कठिनाई के भाव उभर आए।

"शायद मेरी यह विजिट बहुत अच्छी रही।" सारा अटककर बोली।

"मैं एक सलाह दूँ.... मानोगी?" सीमा ने जानना चाहा।

"पूछकर बताती हूँ।" आदत के अनुसार सारा ने डिवाइस लेने के लिए हाथ बढ़ाया। सीमा ने हाथ पीछे खींच लिए और जोर से हँस पड़ी। सारा खिसिया गई। "ठीक है.... मान लूँगी।"

"सारे काम ए.आई. को सौंपकर तुम्हारी पीढ़ी आलसी, निठल्ली और लापरवाह होती जा रही है। तुम्हारी उन्नति रुक गई है। तुमने कहा कि भविष्य में मनुष्य डॉक्टर, इंजीनियर, कलाकार कुछ नहीं बनते। यह तो भयानक स्थिति है। तुम ए.आई. के गुलाम बन गए हो। इस तरह तो मानव सभ्यता का पतन हो जाएगा।" कहते-कहते सीमा सिहर उठी। सारा ने ध्यान से उसकी बातें सुनीं।

"शायद तुम सही कह रही हो। मैंने यहाँ आकर देखा कि अतीत के लोग बहुत काम करते हैं। बच्चे भी पढ़ाई, खेल और दूसरी गतिविधियों में लगे रहते हैं। हम लोग तो अपने डिवाइस पर रील देखने, गप्पें मारने और मौज मस्ती में ही व्यस्त रहने लगे हैं। अपना हर काम हम ए.आई. से पूछकर ही करते हैं। हम अपनी भावनाओं तक को ए.आई. के बिना नहीं समझ पाते। अपना नाम बताने जैसे मामूली प्रश्न का उत्तर भी खुद नहीं देना चाहते। तुम्हारी पीढ़ी ने हमारे जीवन को सुविधाजनक बनाया पर हमने उसका गलत

फायदा उठाया।" सारा बात को समझ गई थी।

"तुमने ठीक कहा सारा लेकिन सारी गलती तुम्हारी नहीं है। हमारी पीढ़ी को भी ए.आई. के साथ सावधानी से काम लेना होगा।"

"अब मैं चलती हूँ। मदद के लिए धन्यवाद सीमा।" कहते हुए सारा ने डिवाइस के कुछ बटन दबाए। तुरंत ही जटिल बनावट वाली एक गोल सी मशीन कमरे में प्रकट हो गई। सारा ने कुछ सेकेंड मशीन की ओर देखा तो मशीन चालू हो गई। नन्हे जुगनू जैसे रंगीन बल्ब उसमें जलने लगे।

"यह मेरी आँखों के रेटिना स्कैन से कमांड लेती है।" सारा ने बताया।

सीमा आँखें फाड़े देख रही थी। बंद कमरे में अचानक यह मशीन कहाँ से आ गई थी?

"मैंने इसे तुम्हारे वर्तमान समय से एक सेकंड आगे खड़ा किया था। इसलिए तुम इसे नहीं देख सकती थीं। जबकि यह पूरे समय यहीं पर खड़ी हुई थी।" सारा ने उसकी हैरानी दूर कर दी।

"क्या मैं भी तुम्हारे साथ भविष्य में जा सकती हूँ?" सीमा पूछ बैठी।

"सॉरी.... अभी नहीं। क्योंकि अभी तुम्हारे समय यानी 2026 में इसका निर्माण नहीं हो पाया है।" कहते हुए सारा मशीन के अंदर जाकर बैठ गई और पलक झपकते ही गायब हो गई। सीमा भी मन मसोसकर अपने बिस्तर पर लेट गई। न जाने कब उसकी आँख लग गई।

"तुमने फिर अपने रंग मेज पर फैला रखे हैं सीमा।" माँ की आवाज सुनकर सीमा की आँखें खुल गई। सुबह हो गई थी। सुनहरी धूप कमरे में आ रही थी।

"आपकी बात सही थी माँ। सारा से मिलकर मैं सब समझ गई।" वह उनसे लिपट गई। रात की सारी बातें वह माँ को बताने लगी।

"बड़ा अच्छा सपना देखा तुमने।" माँ ने उसकी ओर स्नेह से देखा।

"यह सपना नहीं था माँ।" सीमा ने विरोध किया।

"भूतकाल की यात्रा विज्ञान के अनुसार संभव नहीं सीमा। यह एक पैराडॉक्स को जन्म देती है।"

"पैराडॉक्स..... वह क्या होता है माँ?" सीमा ने चकित होकर पूछा।

"फिर कभी बताऊँगी। अभी हमें स्कूल के लिए देर हो रही है। तैयार हो जाओ।" विज्ञान शिक्षिका माँ मुस्कुराते हुए कमरे से बाहर चली गईं। सीमा असमंजस में पड़ी देखती रह गई।

उसके बिस्तर पर पाँच कलर पेंसिलें रखी हुई थीं।

❐

ईमेल- *kalpna11566@gmail.com*